घर के कचरे से अपना बाग सजाएं

डॉ. प्रीति जोशी

कचरा व्यर्थ नहीं अनमोल है। यह मिट्टी का वह संचित धन है जिससे प्रकृति फलती फूलती है। पतझड़ आमंत्रण है अगले वसंत का, अगली बहार का। यह रहस्य है प्रकृति की चिरंजीविता का, आत्मनिर्भरता का और सुन्दरता का। हम और आप भी इस रहस्य को समझें तो प्रकृति के कार्य में हाथ बंटा सकते हैं और अपना गुलशन सजा सकते हैं।

हमें अपने संसाधनों के सही उपयोग की कला आनी चाहिए। हम अपने घर के कचरे से ही, घर की बगिया सजा सकते हैं। घर के कचरे के व्यवस्थापन का तरीका बहुत आसान है। जरूरत है सिर्फ थोड़ी सी दिलचस्पी और थोड़ी सी देखभाल की।

घरेलू कचरे का व्यवस्थापन

इस पद्धति में पेड़ की छांव में 3'×3'×3' फीट आकार का ईंटों का एक टैंक बनाया जाता है। इसके बीच में ईंटों की दीवार बांधकर दो बराबर भागों में विभाजित कर दिया जाता है।

इस प्रकार 1.5×3×3 के दो टैंक बन जाते हैं। बीच की विभाजन की दीवार में बराबर दूरी पर एकांतर छिद्र किए जाते हैं ताकि हवा की आवाजाही हो सके एवं केंचुए एक टैंक से दूसरे टैंक में आ-जा सकें।

इस यूनिट को बनाने पर आने वाला लगभग खर्च तालिका में दिया गया है। जाहिर है कि करीब 390 से 400 रुपए में एक यूनिट बनाया जा सकता है।

भरने की विधि

आम तौर पर एक परिवार की रसोई से तकरीबन 250 से 500 ग्राम तक सब्ज़ी, फल, खराब हुआ भोजन जैसा विघटन योग्य कचरा प्रतिदिन एकत्र होता है। इस कचरे को पहले टैंक में हर रोज़ इकट्ठा करते रहते हैं। 6 से 9 इंच तक टैंक भर जाने पर उस पर थोड़ी सूखी पत्तियां, हरी घास, बगीचे का कचरा आदि डाला जा सकता है। रसोईघर के कचरे के अलावा चंद सूखी पत्तियां, पेड़ों की कटिंग, घास-फूस इत्यादि डालना अच्छा रहता है।

इस प्रकार रोज़ाना कचरा एकत्र करते रहने पर लगभग दो माह में पहला टैंक भर जाता है। तब उसमें गोबर पानी का घोल छिड़ककर उसे काली पॉलीथीन से ढंक दिया जाता है और कचरा दूसरे टैंक में एकत्र किया जाता है। पहले टैंक को ढंकने के 15 दिन बाद उसकी पॉलीथीन हटाकर उसमें 200-250 केंचुए छोड़े जाते हैं। इस पर सूखी घास की पतली परत अथवा गीली जूट की बोरी ढंक दी जाती है। इस टैंक में थोड़ा-थोड़ा पानी तीन-चार दिन के अंतर से दिया जाता है ताकि नमी बनी रहे।

सामान	मात्रा	रुपए
ईंटें	150	150.00
सीमेंट	1/2 बैग	60.00
रेत	4 बैग	20.00
कारीगर	1	100.00
मज़दूर	1	60.00

पहले टैंक में केंचुए छोड़े 45 दिन हो जाने पर इसमें वर्मीकम्पोस्ट बन जाता है और केंचुए दूसरे टैंक की तरफ आ जाते हैं। इस समय पहले टैंक में पानी देना बंद कर देना चाहिए। दो-तीन दिन बाद इस टैंक से खाद निकाली जा सकती है। जब तक (लगभग दो माह में) दूसरा टैंक भी भर जाता है। खाद निकालने के बाद पहले टैंक में कचरा एकत्र करना शुरू किया जा सकता है। इस प्रकार दो टैंकों के इस तंत्र से पहली बार करीबन चार महीने में और फिर दो माह बाद कचरे की उपलब्धता के अनुसार 50-100 किलो खाद निकाली जा सकती है। इस तरह एक वर्ष में करीबन 200 किलो तक खाद तैयार की जा सकती है। इसे घर के बगीचे के फूलों, अन्य सौन्दर्यवर्धक पौधों एवं फलों के पेड़ों पर डालकर बगिया सजाई जा सकती है। साथ ही अच्छी सब्ज़ियां भी उगाई जा सकती हैं।

सावधानियां

1. रसोईघर का कचरा एकत्र करने पर उसमें चींटियों का, विशेषकर लाल चींटियों का प्रकोप हो सकता है। ऐसा होने पर टैंक में अच्छी तरह पानी दें। इसके अलावा एक लीटर पानी, 10 ग्राम हल्दी, 10 ग्राम नमक एवं 10 ग्राम मिर्च पाऊडर मिलाकर कचरे पर छिड़क दें। इससे चींटियों का प्रकोप कम हो सकता है।

2. दोनों टैंकों को हल्का-सा ढंक के रखें ताकि उस पर मच्छर न हों और बरसात में अतिरिक्त पानी व कीड़े एकत्र न हों। परंतु हवा की आवाजाही आवश्यक है। अतः बीच-बीच में टैंक कुछ देर के लिए खोलना आवश्यक है। ध्यान रहे कि टैंक में अतिरिक्त पानी इकट्ठा न हो। *(स्रोत फीचर्स)*